स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

- डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज, बिरौल

भारतीय साहित्य सिद्धांत - काव्य हेतु

सामान्यत: यह देखा जाता है कि कोई भी कर्म बिना किसी हेतु के नहीं होता। उसी तरह काव्य के भी हेतु निश्चित किए गए हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र, हिन्दी काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तीनों में प्रयुक्त 'काव्य-हेतु' निम्नलिखित हैं -
(1) प्रतिभा (2) व्युत्पत्ति (3) अभ्यास (4) शक्ति (5) समाधि आदि। आचार्य दण्डी ने प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य हेतु माना है।

" नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहुनिर्मलम्।
अमन्दश्चाभियोगोऽस्यां कारणं काव्यसंभवे॥

अर्थात् जन्मजात प्रतिभा, निर्मल शास्त्रज्ञान और अनवरत अभ्यास ही काव्य हेतु है। भामह ने काव्य के मुख्य तीन हेतु - प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को ही माना है। आचार्य वामन ने 'व्युत्पत्ति' को ही काव्य का मूल हेतु माना है। भामह 'प्रतिभा' को विशेष रूप से काव्य हेतु मानते हैं। 'राजशेखर' ने 'समाधि' (एकाग्रता) और अभ्यास से उत्पन्न 'शक्ति' को काव्य हेतु माना था। आनन्दवर्धन ने व्युत्पत्ति और प्रतिभा दोनों को काव्य हेतु मानते हुए भी 'प्रतिभा' को विशेष महत्व दिया था। पण्डितराज जगन्नाथ ने भी 'प्रतिभा' को ही काव्य हेतु माना है। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना का हेतु बताते हुए हृदय में सुबुद्धि के उल्लसित होने की बात कही है।

"संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी ॥"

अत: हम कह सकते हैं कि तुलसी की काव्य रचना का हेतु उनकी सुबुद्धि थी। जो शिव की कृपा से जागृत हुई थी।
श्रीपति का कथन है कि शक्ति और अभ्यास विशेष रूप से काव्य हेतु के अन्तर्गत आता है - " शक्ति निपुणता लोकमन बितपति अरु अभ्यास।

x x x

शक्ति सुपुण्य विशेष है जा बिन कवित न होय।
जो कोऊ हठ सौं रचै, हँसी करे कवि सोय ॥

इस संदर्भ में सुकरात का कथन है - कवि लोग कविता इस कारण नहीं करते कि वे बुद्धिमान होते हैं किंतु इस कारण कि उनमें एक विशिष्ट प्रकृति अथवा प्रतिभा है जो उत्साहप्रद होती है।
प्लेटो - अन्त: प्रेरणा को काव्य हेतु स्वीकार करते हैं।
अरस्तु - काव्य हेतु के लिए 'अभ्यास' को प्रमुख मानते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रमुख काव्य हेतु का अर्थ इस प्रकार समझ सकते हैं-

(1) प्रतिभा - भट्ट तोलाट के अनुसार प्रतिभा वह प्रज्ञा है जो नवीन विचार उत्पन्न करने वाली है।

"प्रज्ञा नव नवोन्मेष शालिनी प्रतिभा"

राजशेखर के अनुसार प्रतिभा वह है, जो शब्दों के समूहों की अर्थों के समुदाय को अलंकार एवं सुन्दर उक्तियों को तथा अन्यान्य काव्य सामग्री को हृदय के भीतर सुझाता है।

प्रतिभा वह जन्मजात शक्ति है जो काव्य के लिए नए-नए विचार भाव भाषा के माध्यम से प्रेरित करती है।

(2) अभ्यास - बार-बार प्रयोग को अभ्यास कहते हैं। अर्थात् काव्य रचना के लिए निरन्तर प्रयास करना।

आचार्य दण्डी ने प्रतिभा का सर्वोपरि महत्व स्वीकार करते हुए अभ्यास पर सर्वाधिक बल दिया है।

(3) शक्ति - शक्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में एक मत नहीं है। एक वर्ग शक्ति और प्रतिभा को एक समान मानता है तो दूसरा वर्ग शक्ति को प्रतिभा से भिन्न एक स्वतन्त्र काव्य हेतु स्वीकारता है। किंतु शक्ति और प्रतिभा पर्याय हैं।

(4) समाधि - मन की एकाग्रता को समाधि कहते हैं। इसके संस्थापक राजशेखर हैं। उन्होंने लिखा है काव्य कारणों में समाधि सर्वोत्कृष्ट है। समाधि आंतरिक अभ्यास है।

(5) व्युत्पत्ति - इसका अर्थ है विशेष उत्पत्ति। अर्थात् जब भी कोई रचना होती है वह कवि द्वारा की गई विशेष उत्पत्ति ही होती है। व्युत्पत्ति के लिए आवश्यक तत्व - भाषा, समाज एवं संस्कृति व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि हैं।

वस्तुतः मध्यकाल तक आचार्यों ने ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा को ही काव्य का मूल हेतु माना था। आधुनिक काल में हेतु की नई उद्भावना की गयी।

Scanned with CamScanner